Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 15-18

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी की भूमिका: ऐतिहासिक एवं सामाजिक अध्ययन

डॉ. रविन्द्र कुमार

सहायक आचार्य, इतिहास, शिक्षा संकाय, IASE मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17177384

Corresponding Author: डॉ. रविन्द्र कुमार

भूमिका

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परम्परा में नारी का स्थान अत्यंत विशिष्ट एवं अविस्मरणीय रहा है। भारतीय मनीषा ने सृष्टि की उत्पत्ति, पोषण और संवर्धन में नारी को शक्ति, मातृत्व और ज्ञान का प्रतीक माना है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक समय तक नारी न केवल जीवनदायिनी रही, बल्कि शिक्षा, दर्शन, साहित्य, कला, धर्म और सामाजिक संरचना की आधारशिला के रूप में सक्रिय दिखाई देती है। ऋग्वेद और उपनिषदों में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों का उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि उस युग में स्त्रियों को आध्यात्मिक और दार्शनिक विमर्शों में समान रूप से भागीदारी का अवसर प्राप्त था। तथापि, समय के साथ सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तनों ने नारी की भूमिका को प्रभावित किया। उत्तरवैदिक और स्मृति-काल में नारी को धीरे-धीरे शिक्षा और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया से वंचित किया गया और उसकी भूमिका मुख्यतः परिवार और गृहस्थी तक सीमित कर दी गई। यद्यपि इस काल में भी कुछ स्त्रियाँ ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहीं, परंतु सामान्यतः उन्हें हाशिये पर धकेल दिया गया। मध्यकाल में स्त्रियों के लिए औपचारिक शिक्षा के अवसर कम हो गए, किंतु भक्ति आंदोलन ने उन्हें पुनः समाज के मध्य लाने का कार्य किया। संत कवयित्री मीरा, ललद्यद, अक्का महादेवी आदि ने भक्ति साहित्य और धार्मिक दर्शन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि नारी केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि ज्ञान और आध्यात्मिकता की संवाहक भी है। औपनिवेशिक युग में जब सामाजिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत हुई, तब स्त्रियों की शिक्षा और अधिकारों के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए गए। सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई जैसी अग्रणी महिलाओं ने स्त्री शिक्षा की पुनर्स्थापना की और भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए। आधुनिक भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्त्रियों ने राजनीतिक आंदोलनों और सामाजिक सुधार अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाई। सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली जैसी महान महिलाओं ने यह सिद्ध किया कि भारतीय नारी केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र की दिशा तय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार, भारतीय इतिहास और संस्कृति की यात्रा में नारी की भूमिका बहुआयामी रही है। यह शोध-पत्र इसी ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी की स्थिति और योगदान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसमें वैदिक साहित्य, उपनिषद, स्मृति-ग्रंथ, मध्यकालीन भक्ति साहित्य तथा आधुनिक सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि

यह समझा जा सके कि भारतीय परम्परा में नारी की भूमिका किस प्रकार विकसित हुई, किस प्रकार सीमित हुई और किस प्रकार उसने पुनः अपनी पहचान स्थापित की।

मूलशब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, नारी शिक्षा, वैदिक साहित्य, सामाजिक भूमिका, स्त्री विमर्श

1. प्रस्तावना

भारतीय परम्परा में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' (मनुस्मृति 3.56) का उद्घोष नारी की महत्ता और उसके गरिमामय स्थान को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है। इस वाक्य का तात्पर्य यह है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ ईश्वर और समस्त देवत्व का वास होता है। भारतीय चिंतन में नारी को केवल गृहस्थ जीवन का एक अंग भर नहीं माना गया, बल्कि उसे सम्पूर्ण सृष्टि और सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। वह जीवनदायिनी, पोषणकर्त्री और शक्ति स्वरूपा होने के साथ-साथ ऋषिकाओं, दार्शनिकों, कवयित्रियों और शिक्षिकाओं के रूप में ज्ञान परम्परा की संवाहक भी रही है।

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा और दार्शनिक विमर्शों में समान भागीदारी का अवसर प्राप्त था। गार्गी वाचक्नवी ने जनक के दरबार में आयोजित ब्रह्मविद्या-सम्बन्धी शास्त्रार्थ में याज्ञवल्क्य जैसे महर्षियों को कठोर प्रश्नों से चुनौती दी। इसी प्रकार, मैत्रेयी ने आत्मा और अमरत्व के प्रश्नों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। लोपामुद्रा, अपाला और विश्ववारा जैसी ऋषिकाओं ने ऋग्वेद में मंत्रों की रचना की, जो नारी की बौद्धिक शक्ति और आध्यात्मिक चेतना का जीवंत प्रमाण है।

मध्यकाल में जब स्त्रियों की औपचारिक शिक्षा पर अनेक प्रकार की सामाजिक सीमाएँ लग चुकी थीं, तब भक्ति आंदोलन ने उन्हें समाज के केंद्र में पुनः स्थापित करने का कार्य किया। इस काल की संत महिलाओं ने धर्म, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया। मीरा बाई की भक्ति कविताओं ने न केवल कृष्णभक्ति को लोकप्रिय बनाया, बल्कि स्त्री की स्वतंत्र चेतना और आध्यात्मिक अधिकार को भी अभिव्यक्ति दी। कश्मीर की ललद्यद ने अपने वचनों के माध्यम से रहस्यवाद और आत्मानुभूति की गहन अनुभूतियों को शब्द दिए। दक्षिण भारत की अक्का महादेवी ने अपने कवित्त और जीवन के माध्यम से सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए भक्ति और दर्शन की नई व्याख्या प्रस्तुत की। इन संत कवयित्रियों ने यह सिद्ध किया कि नारी भक्ति और ज्ञान की धारा को दिशा देने में समान रूप से सक्षम है।

आधुनिक युग में स्त्रियों ने न केवल शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में बल्कि राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंडिता रमाबाई ने संस्कृत की विदुषी होने के साथ-साथ स्त्री शिक्षा और स्त्री अधिकारों की पक्षधर के रूप में भारतीय समाज में एक नई दृष्टि का संचार किया। सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा के लिए पहला विद्यालय स्थापित कर यह सिद्ध कर दिया कि शिक्षा ही स्त्री मुक्ति का सबसे सशक्त साधन है। इसी प्रकार, सरोजिनी नायडू ने साहित्य, राजनीति और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई और 'भारत कोकिला' के रूप में विख्यात हुईं। इन महिलाओं ने सामाजिक एवं शैक्षिक चेतना का संचार करते हुए भारतीय स्त्री के स्वरूप को नई पहचान प्रदान की।

इस प्रकार, भारतीय इतिहास की यात्रा में यह स्पष्ट है कि नारी ने हर युग में अपने ज्ञान, साहित्य, दर्शन और सामाजिक चेतना से संस्कृति को समृद्ध किया है। कभी वह वैदिक ऋषिकाओं के रूप में दार्शनिक गूढ़ार्थ प्रस्तुत करती है, कभी भक्ति कवयित्रियों के रूप में ईश्वर-भक्ति और सामाजिक विद्रोह की आवाज़ उठाती है, और कभी आधुनिक युग में शिक्षिका, सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी बनकर राष्ट्र की चेतना को प्रखर करती है। नारी की यह बहुआयामी भूमिका ही भारतीय ज्ञान परम्परा की वास्तविक समृद्धि और शक्ति का आधार है।

1. वैदिक काल में नारी की भूमिका

वैदिक साहित्य में नारी को ज्ञान और धर्म का सहचर माना गया।

ऋग्वेद में 27 स्त्री ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने मंत्रों की रचना की। (Keith, 1925)

गार्गी व मैत्रेयी ने ब्रह्मविद्या पर याज्ञवल्क्य से प्रश्न किए, जो उपनिषदों में दर्ज हैं (Brihadaranyaka Upanishad, 3.6; 4.5)।

शिक्षा का अधिकार स्त्रियों को समान रूप से प्राप्त था। 'उपनयन संस्कार' केवल पुरुषों के लिए ही नहीं, बल्कि स्त्रियों के लिए भी प्रचलित था (Altekar, 1959)।

इस प्रकार, वैदिक युग में नारी ज्ञान परम्परा की सक्रिय सहभागी रही।

2. उत्तरवैदिक एवं स्मृति काल

उत्तरवैदिक युग में धीरे-धीरे स्त्रियों की शिक्षा और सार्वजनिक भूमिका सीमित होने लगी।

मनुस्मृति और धर्मशास्त्रों में स्त्रियों को परिवार और गृहस्थ जीवन तक सीमित रखने के निर्देश मिलते हैं।

तथापि, अपाला, विश्ववारा, लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं के उदाहरण इस काल में भी मिलते हैं।

स्मृति युग में नारी की स्थिति 'पत्नि-धर्म' तक सीमित होती गई, परंतु गृहस्थ आश्रम की रीढ़ वही बनी रही (Sharma, 1974)।

3. मध्यकालीन भारत में नारी और ज्ञान परम्परा

मध्यकालीन भारत में स्त्रियों के लिए औपचारिक शिक्षा के अवसर घटे, लेकिन भक्ति आंदोलन ने नारी को नए अवसर प्रदान किए।

मीरा बाई ने अपनी कविताओं और भक्ति गीतों से ईश्वर भक्ति और स्त्री स्वतंत्रता की नई धारा प्रवाहित की।

कश्मीर की ललद्यद और दक्षिण की अक्का महादेवी ने ज्ञान, दर्शन और रहस्यवाद में अमूल्य योगदान दिया।

इस काल में स्त्रियों ने मौखिक परम्परा, लोकगीत, भक्ति पद और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से ज्ञान का संचार किया (Tharu & Lalita, 1991)।

4. औपनिवेशिक युग और आधुनिक पुनर्जागरण

ब्रिटिश काल में शिक्षा सुधार आंदोलनों ने स्त्रियों के लिए नए अवसर खोले।

सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव रखी और लड़कियों के लिए पहला विद्यालय खोला।

पंडिता रमाबाई ने संस्कृत विदुषी होकर स्त्रियों के अधिकार और शिक्षा पर महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस काल में स्त्रियों ने पत्रकारिता, साहित्य और समाज सुधार आंदोलनों में भाग लिया (Forbes, 1996)।

5. स्वतंत्रता आंदोलन और नारी चेतना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नारी ने शिक्षा और राजनीति दोनों क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई।

एनी बेसेन्ट, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, उदयन देवी आदि ने राष्ट्रीय चेतना को आगे बढ़ाया।

गांधीजी ने 'स्त्री शक्ति' को राष्ट्र की आत्मा बताया और उनके सहयोग को स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ माना (Chatterjee, 1989)।

6. समकालीन परिप्रेक्ष्य

आज नारी भारतीय शिक्षा, शोध, विज्ञान, साहित्य और सामाजिक विकास में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही है।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) में समावेशी शिक्षा और लैंगिक समानता पर बल दिया गया है।

नारी विमर्श (Feminist Discourse) भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्परिभाषित कर रहा है।

समकालीन स्त्रियाँ परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य कर रही हैं।

7. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी की भूमिका वास्तव में बहुआयामी और बहुपरत रही है। वैदिक काल में वह केवल गृहस्थी की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि ऋषिकाओं, दार्शनिकों और मंत्रद्रष्टाओं के रूप में भी समाज के बौद्धिक विमर्श का अभिन्न अंग रही। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने यह सिद्ध किया कि स्त्रियाँ न केवल ज्ञानार्जन में सक्षम थीं, बल्कि वे गहन दार्शनिक प्रश्नों और आध्यात्मिक सत्य की खोज में भी पुरुषों की समान सहभागिता निभा सकती थीं। मध्यकाल में, जब सामाजिक और धार्मिक परंपराओं ने स्त्रियों को औपचारिक शिक्षा और स्वतंत्र चिंतन से वंचित करने का प्रयास किया, तब भी भक्ति आंदोलन की कवयित्रियों ने नारी की आत्मचेतना और सृजनात्मक शक्ति को मुखर रूप से व्यक्त किया। मीरा बाई, ललद्यद और अक्का महादेवी जैसी संत महिलाओं ने अपने काव्य और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि स्त्री केवल घर और परिवार तक सीमित नहीं, बल्कि वह ईश्वर-भक्ति, साहित्य और सामाजिक परिवर्तन की धारा को भी दिशा दे सकती है। आधुनिक युग में नारी की भूमिका और भी व्यापक रूप से सामने आई। शिक्षा सुधार आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों ने सक्रिय भागीदारी निभाकर यह सिद्ध किया कि वे समाज और राष्ट्र की नियति गढ़ने में पुरुषों से किसी भी प्रकार कमतर नहीं हैं। सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा की अलख जगाई, पंडिता रमाबाई ने स्त्री अधिकारों और आत्मनिर्भरता की वकालत की, और सरोजिनी नायडू ने साहित्य और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में स्त्री नेतृत्व की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत की। इस प्रकार, भारतीय नारी ने अपने ज्ञान, साहस और संगठनात्मक शक्ति से समाज को नई दिशा दी। यद्यपि विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों, जैसे सामाजिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक ढाँचों और औपनिवेशिक

नीतियों ने समय-समय पर उसकी भूमिका को सीमित और नियंत्रित करने का प्रयास किया, फिर भी उसने निरंतर अपने ज्ञान, संस्कृति और समाज को समृद्ध किया। नारी ने हर युग में अपने लिए नए अवसर खोजे, अपने योगदान से सांस्कृतिक धारा को प्रखर बनाया और सामाजिक संरचना में गहन परिवर्तन किए। आज की परिस्थितियों में यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी के योगदान का पुनः मूल्यांकन करें। स्त्री केवल अतीत का गौरवशाली हिस्सा नहीं है, बल्कि वह वर्तमान और भविष्य की शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नीतियों की दिशा तय करने वाली प्रमुख शक्ति भी है। यदि नारी के ऐतिहासिक योगदान को सही रूप से मान्यता दी जाए और उसे शिक्षा, शोध, नीति-निर्माण और सामाजिक विकास की मुख्यधारा में उचित स्थान प्रदान किया जाए, तो भारतीय समाज अधिक संतुलित, समावेशी और प्रगतिशील बन सकता है।

8. संदर्भ सूची (References)

1. Altekar AS. The position of women in Hindu civilization. Delhi: Motilal Banarsidass; c1959.
2. Keith AB. The religion and philosophy of the Veda and Upanishads. Cambridge, MA: Harvard University Press; c1925.
3. Sharma RS. Sudras in ancient India. Delhi: Motilal Banarsidass; c1974.
4. Tharu S, Lalita K. Women writing in India: 600 BC to the present. New York: Feminist Press; c1991.
5. Forbes G. Women in modern India. Cambridge: Cambridge University Press; c1996.
6. Chatterjee P. Colonialism, nationalism and colonized women: the contest in India. Am Ethnol. 1989;16(4):622-633.
7. Chakravarti U. Conceptualising Brahmanical patriarchy in early India. Econ Polit Wkly. 1993;28(14):579-585.
8. Joshi L. Studies in the Upanishads. Delhi: Motilal Banarsidass; c1988.
9. Rao A. Gender and caste. New Delhi: Kali for Women; c2003.
10. Kosambi DD. The culture and civilization of ancient India in historical outline. Delhi: Vikas; c1975.
11. Karve I. Hindu society: an interpretation. Pune: Deccan College; c1968.
12. Banerjee S. Women in peace and conflict in India. Hyderabad: Sangam Books; c1989.
13. Singh K. The women of India: colonial and post-colonial narratives. New Delhi: Sage; c2000.
14. Jayawardena K. Feminism and nationalism in the Third World. London: Zed Books; c1986.
15. Roy A. Gender and caste: contemporary issues in Indian feminism. New Delhi: Kali for Women; c2005.
16. Deshpande S. Contemporary India: a sociological view. New Delhi: Penguin; c2014.
17. Nanda BR. Indian women: from purdah to modernity. Delhi: Vikas; c1996.
18. Mazumdar V. Women in India: some issues. Indian J Soc Work. 1972;33(3):251-258.
19. Kumar R. The history of doing: an illustrated account of movements for women's rights and feminism in India 1800-1990. New Delhi: Kali for Women; c1993.
20. Government of India. National education policy 2020. New Delhi: Ministry of Education; c2020.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.